

ЗАПИСКИ

ИСТОРИКО-ФИЛОЛОГИЧЕСКАГО ФАКУЛЬТЕТА

ИМПЕРАТОРСКАГО

С.-ПЕТЕРБУРГСКАГО УНИВЕРСИТЕТА.

ЧАСТЬ XVI.

САНКТПЕТЕРБУРГЪ.

ТИПОГРАФІЯ ИМПЕРАТОРСКОЙ АКАДЕМИИ НАУКЪ.

(ВАС. ОСТР., 9 ЛИН., № 12.)

1887.

St. Petersburg University
Historico-Philological Faculty

vol. 16

сборника разсказовъ. Рукопись неполная и безъ заглавія. Обозначается въ библиографическомъ указателѣ подъ заглавіемъ «катханаки».

Стр. 123. Относящіяся сюда надписи см. въ изданіи Ed. Müller, Ancient Inscriptions in Ceylon, стр. 33 и сл.

Стр. 156. Въ изданіи Paul Steinthal'a это мѣсто находится на стр. 36.

Стр. 180. Примѣч. 2. См. изданіе Dr. Morris'a, стр. 53, 55, 57, 59, 61, 64, 66.

БУДДИЗМЪ.

ИЗСЛѢДОВАНІЯ И МАТЕРІАЛЫ.

СОЧИНЕНІЕ

И. П. МИНАЕВА.

अहमपि कृतशक्तिर्नामि संबुद्धमार्यं
नमसि गरुडपत्ने किं न यासि द्विरेफाः ॥

ТОМЪ I. ВЫПУСКЪ II.

МАХАВЈУТНАТТИ.
У-И-ХЭ-БИ-ЦЗИ-ЯО.
НАМАСАНГІТИ.

ТАБЛИЦА.

САНКТПЕТЕРБУРГЪ.

ТИПОГРАФІЯ ИМПЕРАТОРСКОЙ АКАДЕМІИ НАУКЪ.

Вас. Остр., 9 лин., № 12.

1887.

St. Petersburg
Imperial Academy of Sciences

Печатано по опредѣленію Историко-Филологическаго Факультета Императорскаго С.-Петербургскаго Университета 4 Сентября 1887 г.

За Декана *И. Помяловскій.*

ОГЛАВЛЕНІЕ.

	Стр.
Предисловіе.....	I—XII.
I. Махавјутпатти.....	1.
II. У-и-хэ-би-цзи-яо.....	119.
III. Намасагъти.....	135.

1 211 दुर्गतयः ॥ ॥ 212—214 ॥*	1 236 सर्वात्मकारनामानि ॥ ॥ 237 ॥*
1 216 अष्टादश विद्यास्थानानि ॥ ॥ 216—	1 238 पूजापरिष्काराः ॥
220 ॥*	1 280 पुष्पनामानि ॥
1 221 ब्राह्मणविक्रमः (sic) ॥ ॥ 222—	1 281 पुष्पमूलति (sic) नामानि ॥
223 ॥*	1 282 पुष्पगुणनामानि ॥
1 228 स्वर्गकामादीनां नामानि ॥ ॥ 224—	1 283 सर्वधूपनामानि ॥ ॥ 283—284 ॥*
230 ॥*	1 286 अर्घ्यमहाविब्रलत्रघघवनसकमूत्र-
1 231 श्लेषधिनामानि ॥	नवित्तगणना (१) नामानि ॥ ॥ 286—
1 232 वस्त्रनामानि ॥	244 ॥*
1 233 परिष्कारनामानि ॥	1 246 दिग्विदिग्मानि १) ॥ ॥ 246 —
1 238 रङ्गनामानि ॥	273 ॥*
1 234 मणिरत्ननामानि ॥	1 273 व्याधिनामानि ॥
1 236 शङ्खादिनामानि ॥	

Всѣ рукописи сообщаютъ одинъ и тотъ же текстъ, но съ массою описокъ; часть ихъ помѣщена въ подстрочныхъ примѣчаніяхъ; болѣе значительный выборъ такого рода вариантовъ будетъ представленъ при переводѣ, въ мѣстахъ, очевидно, дошедшихъ до насъ въ сильно искаженномъ видѣ, или же допускающихъ исправленія и возстановленія текста приблизительно первоначальнаго.

II. Для втораго сочиненія, озаглавленнаго по китайски: *У-и-хэ-би-цзи-яо*, имѣлось одно китайское изданіе изъ Библиотеки Императорскаго Санктпетербургскаго Университета (подъ № 25149 въ рукописномъ каталогѣ). Санскритскій текстъ этого изданія весьма испорченъ и могъ быть только отчасти возстановленъ съ помощью Махавѣдъпатти. Сомнительныхъ или вполнѣ

* Безъ скр. заглавія.

1) D. U. दिग्विधिगना°

испорченныхъ и непонятныхъ чтеній въ обоихъ сочиненіяхъ, къ сожаленію, весьма много; въ изданіи они отмѣчены *.

Сочиненіе это было обстоятельно описано Абель Ремюза (см. *Mélanges Asiatiques par Abel Rémusat, Tome I, стр. 153 и сл.*). Тоже изданіе находится въ Азіатскомъ Музеѣ Императорской Академіи Наукъ. См. O. Boehtlingk l. c., стр. 343.

III. Текстъ Намасамгити изданъ по слѣд. рукописямъ:

У. Сборникъ нѣсколькихъ буддійскихъ текстовъ на санскритскомъ языкѣ. Китайское изданіе. Въ каталогѣ бібліотеки Императорскаго Санктпетербургскаго Университета занесенъ подъ № 25419. По всей вѣроятности такое же изданіе упоминается М. Мюллеромъ въ *Anecdota Oxoniensia, vol. I, part. III, стр. 34*. Подробное описаніе сборника будетъ помѣщено при переводѣ, во второмъ томѣ.

Текстъ издаваемой статьи отличается исправностью. — Въ концѣ статьи приписка, которой нѣтъ въ другихъ изданіяхъ. См. стр. 152.

М. Рукопись новая изъ Катманду, писана непальскою азбукою, на желтой непальской же бумагѣ. Собственность издателя. Много описокъ; л. 1—27; по 5 строкъ на страницѣ.

На листѣ 27 пр. нѣсколько строкъ испорченнаго санскритскаго текста.

На томъ же листѣ (об.) дата:

संवत् १३८८ स्ति अषाढ वदि १ रित १ सपुर्णया डादिनबुलो ॥

Р. Китайское изданіе. Въ каталогѣ университетской бібліотеки подъ № 20314. — Санскритскій текстъ напечатанъ двумя шрифтами: ланцою и тибетскою азбукою. На первомъ листѣ: अर्घ्यमञ्जुश्रीनामसंगीति विक्रति स्म На послѣднемъ 39-мъ: भगवतो मञ्जुश्रीज्ञानसत्त्वस्य परमार्थनामसंगीति । भगवान्तथागतशाक्यमुनिर्भाषिता समाप्ता ।

Д. Другой экземпляръ того же изданія находится въ бібліотеки Императорскаго азіатскаго музея. См. Dorn, Das Asia-

tische Museum, стр. 731. Въ обоихъ экземплярахъ текстъ сходенъ съ У.

К. *Āryanāmasaṅgītīkā* изъ бібліотеки Имп. Санктпетербургскаго Университета, л. 1—130; по 8 и 9 строкъ на страницѣ. Непальская азбука. Рукопись новая, безъ даты. Объ этомъ комментарий см. Bendall, Catalogue, стр. 203. Въ примѣчаніяхъ къ переводу будутъ сообщены выдержки изъ него.

III.

॥ श्रीं नमो मञ्जुनाथाय^{१)} ॥

अथ वज्रधरः श्रीमान्दुर्दात्तदमकः परः ।
त्रिलोकविजयी^{२)} वीरो गुह्यराट्कुलिशेश्वरः ॥ १ ॥
विबुद्धपुण्डरीकाक्षः प्रोत्फुल्लकमलाननः ।
प्रोक्षालयन्वज्रवरं स्वकरेण मुहुर्मुहुः ॥ २ ॥
भृकुटीतरङ्गप्रमुखैरनन्तैर्वज्रपाणिभिः ।
दुर्दात्तदमकैर्वीरैर्वीरवीरवीरभक्तसत्त्वपिभिः ॥ ३ ॥
उल्लालयद्भिः स्वकैरः प्रस्फुरद्वज्रकोटिभिः ।
प्रज्ञोपायमहाकरुणाज्ञगदर्शकैरः पैरः ॥ ४ ॥
दृष्टुष्टुष्टुशैर्मुदितैः क्रोधविग्रहैरुत्तमैः
बुद्धकृत्यकैर्नथिः सार्धं प्रणतविग्रहैः ॥ ५ ॥
प्रणम्य नाथं संबुद्धं भगवतं तथागतं ।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा इदमाह स्थितो ऽग्रतः ॥ ६ ॥
मद्धिताय ममार्थाय मे^{३)} ऽनुकम्पाय हे^{४)} विभो ।
मायाज्ञालाभिसंबोधैर्यथा^{५)} लाभो भवाम्यहं ॥ ७ ॥

1) M. श्री० P. मञ्जुश्रीकुमारभूताय — 2) Y. वि०; M. त्रैलोक्य० — 3) Y. — P. नष्टं. अनुक०. — 4) K. — P. मे — Y. म — M. म्य — 5) P. ० धिर्यथा

अज्ञानपङ्कमग्रानां लेशशब्दाकुलचेतसां ।
 हृिताय सर्वसत्वानामनुत्तरफलाप्तये ॥ ८ ॥
 प्रकाशयतु संबुद्धो भगवां शास्ता जगद्गुरुः ।
 महासमयतत्त्वज्ञ इन्द्रियाशयवित्परः ॥ ९ ॥
 भगवं ज्ञानकायस्य महोष्णीषस्य गीष्यतेः ।
 मञ्जुश्रीज्ञानसत्त्वस्य ज्ञानमूर्तेः स्वयंभुवः ॥ १० ॥
 गम्भीरार्थामुदार्थी महार्थामसमां शिवां ।
 आदिमध्यात्तकल्याणी नामसंगीतिमुत्तमां ॥ ११ ॥
 यातीतैर्भाषिता बुद्धैर्भाषिष्यते ह्यनागताः ।
 प्रत्युत्पन्नाश्च संबुद्धा यां भाषन्ते पुनः पुनः ॥ १२ ॥
 मायाजालमहातन्त्रे या चास्मिं संप्रगीयते ।
 महावज्रधरैः क्लृष्टैर्मैयैर्मन्त्रधारिभिः ॥ १३ ॥
 अहं चैनां धारयिष्याम्यानिर्वाणाद्दृढाशयः १) ।
 यथा भवाम्यहं नाथ सर्वसंबुद्धगुह्यधृक् ॥ १४ ॥
 प्रकाशयिष्ये सत्वानां यथाशयविशेषतः ।
 अशेषज्ञानाशाय अशेषज्ञानहानये ॥ १५ ॥
 एवमधेयस्य गुह्येन्द्रो वज्रपाणिस्तथागतं ।
 कृताञ्जलिपुटो भूवा प्रह्लाकायस्थितो ऽग्रतः ॥ १६ ॥
 अध्येषणागाथाः २) षोडश ॥

अथ शाक्यमुनिर्भगवां संबुद्धो द्विपदोत्तमः ।
 निर्णामय्यायतां स्फीतां स्वजिह्वां स्वमुखाच्छुभां ॥ १ ॥
 स्मितं संदर्श्य लोकानामवायत्रयशोधनं ।
 त्रैलोक्याभासकराणां चतुर्भारिशासनं ॥ २ ॥

त्रिलोकमापूरयत्या १) ब्राह्म्या मधुर्या गिरा ।
 प्रत्यभाषत गुह्येन्द्रं वज्रपाणिं महाबलं ॥ ३ ॥
 साधु वज्रधर २) श्रोमां साधु ते वज्रपाणये ।
 यस्त्वं जगद्धितार्थाय महाकारुणयान्वितः ॥ ४ ॥
 महार्थां नामसंगीतिं पवित्रामघनाशनं ।
 मञ्जुश्रीज्ञानकायस्य मत्तः ३) श्रोतुं समुद्यतः ॥ ५ ॥
 तत्साधु देशयाम्येष अहं ते गुह्यकाधिपः ।
 शृणु त्वमेकाग्रमनास्तत्साधु भगवन्निति ॥ ६ ॥
 ॥ प्रतिवचनगाथाः षट् ॥

अथ शाक्यमुनिर्भगवां सकलं मन्त्रकुलं मकृत् ।
 मन्त्रविद्याधरकुलं व्यवलोक्य ४) कुलत्रयं ॥ १ ॥
 लोकलोकोत्तरकुलं लोकालोककुलं मकृत् ।
 महामुद्राकुलं चाप्यं महोष्णीषकुलं मकृत् ॥ २ ॥
 ॥ षट्सावलोकनगाथे द्वे ॥

इमां षड्मन्त्रराजनसंयुक्तामद्वयोदयां ।
 अनुत्पादधर्मिणीं गाथां भाषते स्म गिरांपतेः ॥ १ ॥
 अ अ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः स्थितो हृदि ५) ।
 ज्ञानमूर्तिरहं बुद्धो बुद्धानां त्र्यधवर्तिनां ॥ २ ॥
 श्रो वज्रतीक्ष्णदण्डः खड्केद्रप्रज्ञाज्ञानमूर्तये ।
 ज्ञानकायवागीश्वर अर्पचनाय ते नमः ॥ ३ ॥
 ॥ मायाजालाभिसंबोधिक्रमगाथास्तिस्रः ॥

1) Такъ К. — Р. У. °णां° — 2) М. अध्येषणाज्ञान°.

1) М. त्रैलोक्य — 2) J. P. °रः — М. — 3) М. मत्त — 4) М. देवलोक्य — 5) हृद-
 परहंबुद्धो

॥ नामसंगीति ॥

तद्यथा भगवां बुद्धः संबुद्धो ऽकारसंभवः ।
 घ्रकारः सर्ववर्णाद्यो महार्थः परमात्तरः ॥ १ ॥
 महाप्राणो ह्यनुत्पादो वागुदाहारवर्जितः ।
 सर्वाभिलाषहेत्वग्र्यः सर्ववाक्सुप्रभास्वरः ॥ २ ॥
 महामहमहारागः सर्वसत्त्वरतिकरः ।
 महामहमहद्वेषः सर्वज्ञेशमहारिपुः ॥ ३ ॥
 महामहमहामोहो मूढधीमोहसूदनः ।
 महामहमहाक्रोधो महाक्रोधरिपुर्महान् ॥ ४ ॥
 महामहमहालोभः सर्वलोभनिसूदनः ।
 महाकामो महासौख्यो महामोहो महारतिः ॥ ५ ॥
 महाद्वपो महाक्रापो महावर्णो महावपुः ।
 महानामा महोदारो महाविपुलमण्डलः ॥ ६ ॥
 महाप्रज्ञायुधधरो महाज्ञेशाङ्कुशो ऽग्रणीः ।
 महायशा महाकीर्तिर्महाऽयोतिर्महायुतिः ॥ ७ ॥
 महामायाधरो विद्वान्महामायार्थसाधकः ।
 महामायारतिरतो महामायेन्द्रिजालिकः ॥ ८ ॥
 महादानपतिः श्रेष्ठो महाशीलधरो ऽग्रणीः ।
 महान्तान्निधरो धीरो^{१)} महावीर्यपराक्रमः ॥ ९ ॥
 महाध्यानसमाधिस्थो महाप्रज्ञाशरीरधृक् ।
 महाबलो महोपायः प्रणिधिज्ञानसागरः ॥ १० ॥
 महामैत्रीमयो ऽमेयो महार्काहृणिको ऽग्रधीः ।
 महाप्राज्ञो महाधीमां महोपायो महाकृतिः ॥ ११ ॥
 महाऋद्धिबलोपेतो महावेगो महाजवः ।
 महर्द्धिको महेशाख्यो महाबलपराक्रमः ॥ १२ ॥

॥ नामसंगीति ॥

महाभवाद्भिसंभेता महावब्रधरो घनः ।
 महाक्रूरो महारौद्रो महाभयभयंकरः ॥ १३ ॥
 महाविद्योत्तमो नाथो महामत्तोत्तमो गुरुः ।
 महायाननयाद्वणे महायाननयोत्तमः ॥ १४ ॥
 ॥ वब्रधातुमहानण्डलगाथाश्चतुर्दश^{१)} ॥

महवैरोचनो बुद्धो महामौनी महामुनिः ।
 महामत्तनयोद्भूतो महामत्तनयात्मकः ॥ १ ॥
 दशपारमिताप्राप्तो दशपारमिताश्रयः ।
 दशपारमिताशुद्धिर्दशपारमितानयः ॥ २ ॥
 दशभूमिश्चरो नाथो दशभूमिप्रतिष्ठितः ।
 दशज्ञानविशुद्धात्मा दशज्ञानविशुद्धधृक् ॥ ३ ॥
 दशाकारो दशार्थार्थो मुनीन्द्रो दशबलो विभुः ।
 अशेषविश्वार्थकरो दशाकारवशी^{२)} महान् ॥ ४ ॥
 अनादिर्निष्प्रपञ्चात्मा शुद्धात्मा तथतात्मकः ।
 भूतवादी यथावादी तथाकारी अनन्यवाक् ॥ ५ ॥
 अद्वयो ऽद्वयवादी च भूतकोटिव्यवस्थितः ।
 नैरात्म्यसिंहनिनादी^{३)} कुतीर्थ्यमृगभीकरः ॥ ६ ॥
 सर्वत्रगो ऽमोघगतिस्तथागतमनोजवः ।
 जिनो जितारिर्विजयो चक्रवर्ती महाबलः ॥ ७ ॥
 गणमुख्यो गणाचार्यो गणेशो^{४)} गणपतिर्वशी ।
 महानुभावो धीर्यो ऽनन्यनेयो महानयः ॥ ८ ॥
 वागीशो वाक्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरनन्तगीः ।
 सत्यवाक् सत्यवादी च चतुःसत्योपदेशकः ॥ ९ ॥

अविर्वर्तिको ज्ञानागामी खड्गः प्रत्येकनायकः ।
 नानानिर्घाणनिर्घोतो महामूककारणः ॥ १० ॥
 अर्हन् स्त्रीणास्रवो भित्तुर्वीतरागो जितेन्द्रियः ।
 ज्ञेयप्राप्तो ऽभयप्राप्तः शीतीभूतो ज्ञानाविलः ॥ ११ ॥
 विद्याचरणसंपन्नः सुगतो लोकवित्परः ।
 निर्ममो निरहंकारः सत्यद्वयनये स्थितः ॥ १२ ॥
 संसारपारकोटिष्ठः^{१)} कृतकृत्यः स्थले स्थितः ।
 कैवल्यज्ञाननिष्ठतः प्रज्ञाशस्त्रो विदारणः ॥ १३ ॥
 सद्धर्मो धर्मराड् भास्वां लोकालोककरः परः ।
 धर्मेश्वरो धर्मराज्ञा श्रेयो मार्गोपदेशकः ॥ १४ ॥
 सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सर्वसंकल्पवर्जितः ।
 निर्विकल्पो ऽज्ञयो धातुर्धर्मधातुः परो ऽव्ययः ॥ १५ ॥
 पुण्यवान्पुण्यसंभारो ज्ञानं ज्ञानाकरो^{२)} महत्^{३)} ।
 ज्ञानवान्सदसंज्ञानी संभारद्वयसंभृतः ॥ १६ ॥
 शास्वतो विश्वराड् योगी ध्यानं ध्येयो धियांपतिः ।
 प्रत्यात्मवेद्यो ज्ञचलः परमाद्यस्त्रिकायधृक् ॥ १७ ॥
 पञ्चकायात्मको बुद्धो पञ्चज्ञानात्मको विभुः ।
 पञ्चबुद्धात्ममकुटः^{४)} पञ्चचतुरस्रधृक् ॥ १८ ॥
 जनकः सर्वबुद्धानां बुद्धपुत्रः परो वरः ।
 प्रज्ञाभवोद्भवो योनिर्धमयोनिर्भवात्कृत् ॥ १९ ॥
 धनैकसारो वज्रात्मा सद्योजातो^{५)} जगत्पतिः ।
 गगनोद्भवः स्वयंभूः प्रज्ञाज्ञानानलो महान् ॥ २० ॥

1) Y. °स्थः — 2) K. ज्ञानोत्तरं — 3) Y. महाम् — 4) P. K. — Y. °मुकुटः —

5) Y. सद्यो°

वैरोचनो महादीप्तिज्ञानज्योतिर्विरोचनः ।
 जगत्प्रदीपो ज्ञानोल्को महातेजाः प्रभास्वरः ॥ २१ ॥
 विद्याराज्ञो ऽग्रमन्त्रेशो मन्त्रराज्ञा महार्थकृत् ।
 महोष्णीषोद्भूतोष्णीषो विश्वदर्शी विद्यत्पतिः ॥ २२ ॥
 सर्वबुद्धात्मभावाप्यो जगदानन्दलोचनः ।
 विश्वत्रयी विधाता च पूयो मान्यो महाऋषिः ॥ २३ ॥
 कुलत्रयधरो मन्त्री महासमयमन्त्रधृक् ।
 रत्नत्रयधरः^{१)} श्रेष्ठस्त्रिपानोत्तमदेशकः ॥ २४ ॥
 अमोघपाशो विज्ञयी वज्रपाशो महाऋक्षः ।
 वज्राङ्कुशो महापाशो वज्रभैरवभीकरः ॥ २५ ॥
 ॥ सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानगात्राः पञ्चविंशतिः ॥

क्रोधराट् षण्णमखो भीमः षड्रेत्रः षड्भुजो बली ।
 दंष्ट्राकरालकङ्कालो क्लृत्कलशताननः ॥ १ ॥
 यमात्तको विघ्नराड्^{२)} वज्रवेगो भयंकरः ।
 विघुष्टवज्रो क्लृद्वज्रो मापावज्रो महोदरः ॥ २ ॥
 कुलिशेशो वज्रयोनिर्वज्रमाण्डो नभोपमः ।
 अचलैकजटाटोपो गजचर्मपटार्द्रधृक् ॥ ३ ॥
 हाहाकारो महाघोरो ह्रीह्रीकारो भयानकः ।
 अट्टाहासो महाहासो वज्रहासो महारवः ॥ ४ ॥
 वज्रमन्त्रो महासन्त्रो वज्रराज्ञो महासुखः ।
 वज्रचण्डो महामोदो वज्रह्रकार ह्रकृतिः ॥ ५ ॥
 वज्रवाणायुधधरो वज्रखड्गो निकृत्तनः ।
 विश्ववज्रधरो वज्री एकवज्री र्णांजकः ॥ ६ ॥

1) Y. °त्रया° — 2) M. °राज्ञ

॥ नामसंगीति ॥

वज्रज्वालाकरालान्तो वज्रज्वालाशिरोरूढः ।
 वज्रावेशो महावेशः शतान्तो वज्रलोचनः ॥ ७ ॥
 वज्ररोमाङ्कुरतनुर्वज्ररोमैकविप्रकः ।
 वज्रकोटिनखारम्भो वज्रसारधनच्छ्विः ॥ ८ ॥
 वज्रमालाधरः श्रीमां वज्राभरणभूषितः^{१)} ।
 क्लृप्तकृत्सो निर्घोषो वज्रघोषः षडन्तरः ॥ ९ ॥
 मञ्जुघोषो महानादस्त्रैलोक्यैकरवो महान् ।
 आकाशधातुपर्यन्तो घोषो घोषवतां वरः ॥ १० ॥
 ॥ आदर्शज्ञानस्तुतिगाथा दश ॥

तथताभूतनैरात्म्यं भूतकोटिरनन्तरः ।
 शून्यतावादी वृषभो गम्भीरोदारगर्जनः ॥ १ ॥
 धर्मशङ्को महाशब्दो धर्मगण्डी महारणः ।
 अप्रतिष्ठितनिर्वाणो दशदिग्धर्मद्वन्द्वभिः ॥ २ ॥
 अरूपो रूपवानग्र्यो नानारूपो मनोमयः ।
 सर्वरूपावभासश्रीरशेषप्रतिबिम्बधृक् ॥ ३ ॥
 अग्रधृष्यो महेशाख्यत्रैधातुकमहेश्वरः ।
 समुच्छ्रितार्यमार्गस्थो धर्मकेतुर्महोदयः ॥ ४ ॥
 त्रैलोक्यैककुमारारङ्गः स्थविरो वृद्धः प्रज्ञापतिः ।
 द्वात्रिंशत्तन्त्रणधरः कातस्त्रैलोक्यमुन्दरः ॥ ५ ॥
 लोकज्ञानगुणाचार्यो लोकाचार्यो विशारदः ।
 नाथस्त्राता त्रिलोकाप्तः शरणं तायी निरुत्तरः ॥ ६ ॥
 गगनाभोगसंभोगः सर्वज्ञज्ञानसागरः ।
 अविद्याएउकोशसंभेता भवपञ्जरदारणः ॥ ७ ॥

1) Y. ०भूषणः

॥ नामसंगीति ॥

शमिताशेषसंज्ञेशः संसारार्णववारगः ।
 ज्ञानाभिषेकमकुटः सम्यक्संबुद्धभूषणः ॥ ८ ॥
 त्रिडुः खडुः खशमनस्यतो ऽनन्तस्त्रिमुक्तिगः ।
 सर्वावरणनिर्मुक्त आकाशसमतांगतः ॥ ९ ॥
 सर्वज्ञेशमलातीतस्यधानधगतिंगतः ।
 सर्वसत्त्वमहानागो गुणशेखरशेखरः १० ॥
 सर्वोपधिविनिर्मुक्तो व्योमवर्त्मनि सुस्थितः ।
 महाचित्तमणिधरः सर्वरत्नोत्तमो विभुः ॥ ११ ॥
 महाकल्पतरुः स्फीतो महाभद्रघटोत्तमः ।
 सर्वसत्त्वार्थवृत्कर्ता हितैषो सत्त्ववत्सलः ॥ १२ ॥
 शुभाशुभज्ञः कालज्ञः समयज्ञः समयो विभुः ।
 सत्त्वेन्द्रियज्ञो वेलज्ञो विमुक्तित्रयकोविदः ॥ १३ ॥
 गुणी गुणज्ञो धर्मज्ञः प्रशस्तो मङ्गलोदयः ।
 सर्वमङ्गलमाङ्गलयः कीर्तिलक्ष्मीर्यशः शुभः ॥ १४ ॥
 महोत्सवो महाश्यासो महानन्दो महारतिः ।
 सत्कारः सत्कृतिर्भूतिः प्रमोदः श्रीर्यशस्पतिः ॥ १५ ॥
 वरेण्यो वरदः श्रेष्ठः शरण्यः शरणोत्तमः ।
 महाभयारिः प्रवरो निःशेषभयनाशनः ॥ १६ ॥
 शिखी शिखण्डी जटिलो जटो मौण्डी किरीटिमान् ।
 पञ्चाननः पञ्चशिखः पञ्चचौरकशेखरः ॥ १७ ॥
 महात्रतधरो मौञ्जी ब्रह्मचारी त्रतोत्तमः ।
 महातपास्तपोनिष्ठः स्नातको गौतमो ऽग्रणीः ॥ १८ ॥
 ब्रह्मविद्ब्रह्मणो ब्रह्मा ब्रह्मनिर्वाणमाप्तवान् ।
 मुक्तिमोक्तो विमोक्षाङ्को विमुक्तिः शाक्तता शिवः ॥ १९ ॥
 निर्वाणं निर्वृतिः शान्तिः श्रेयो निर्वाणमत्तकः ।
 सुखदुःखात्तकृत्विष्ठा वैरग्यमुपधितयः ॥ २० ॥

अज्ञयो ऽनुपमो ऽव्यक्तो निराभासो निरञ्जनः ।
 निष्कलः सर्वगो व्यापी सूक्ष्मो बीजमनाम्नवः ॥ २१ ॥
 अज्ञो विज्ञो विमलो वात्तदोषो निरामयः ।
 सुप्रबुद्धो^{१)} विबुद्धात्मा सर्वज्ञः सर्ववित्परः ॥ २२ ॥
 विज्ञानधर्मतातीतो ज्ञानमह्यन्नपधृक् ।
 निर्विकल्पो निराभोगद्वयसंबुद्धकार्यकृत् ॥ २३ ॥
 घनादिनिधनो बुद्ध आदिबुद्धो निरन्वयः ।
 ज्ञानिकचतुरमलो ज्ञानमूर्तिस्तथागतः ॥ २४ ॥
 वागीश्वरो महावादी वादिराड् वादिपुंगवः ।
 वदतां वरो वरिष्ठो वादिसिंहो ऽपराजितः ॥ २५ ॥
 समत्तदर्शी प्रामोद्यस्तेजोमाली सुदर्शनः ।
 श्रीवत्सः सुप्रभो दीर्घाभास्वरकरयुतिः ॥ २६ ॥
 महाभिषग्वरः श्रेष्ठः शल्यकर्ता निरुत्तरः ।
 अशेषभैषज्यतरुः क्षेशव्याधिमहारिपुः ॥ २७ ॥
 त्रैलोक्यतिलकः कात्तः श्रीमां नत्तत्रमण्डलः ।
 दशदिग्द्योमपर्यन्तो धर्मधनमहोच्छ्रयः ॥ २८ ॥
 जगच्छैकविपुलो मैत्रो करुणामण्डलः ।
 पद्मनर्तेश्वरः श्रीमां रत्नच्छत्रो महाविभुः ॥ २९ ॥
 सर्वबुद्धमहाराजा सर्वबुद्धात्मभावधृक् ।
 सर्वबुद्धमहायोगः सर्वबुद्धिकशासनः ॥ ३० ॥
 वञ्ज्रत्नाभिषेकश्रीः सर्वरत्नाधिपेश्वरः ।
 सर्वलोकेश्वरपतिः सर्ववञ्ज्रराधिपः ॥ ३१ ॥
 सर्वबुद्धमहाचित्तः सर्वबुद्धमनोगतिः ।
 सर्वबुद्धमहाकायः सर्वबुद्धसरस्वतिः ॥ ३२ ॥

वञ्ज्रसूर्यो महालोको वञ्जेन्दु विमलप्रभः ।
 विरगादिमहारागो विश्वत्रणो च्चलप्रभः ॥ ३३ ॥
 संबुद्धवञ्ज्रपर्यङ्को बुद्धसंगीतिधर्मधृक् ।
 बुद्धपद्मोद्भवः श्रीमां सर्वज्ञज्ञानकोशधृक्^{१)} ॥ ३४ ॥
 विश्वमायाधरो राजा बुद्धविद्याधरो महान् ।
 वञ्ज्रतीक्ष्णो महाखड्गो विशुद्धः परमात्तरः ॥ ३५ ॥
 डुःखच्छेदमहापानत्रयधर्ममहापुधः ।
 त्रिनन्निगवञ्ज्रगाम्भीर्यो वञ्ज्रबुद्धिर्धर्मार्थवित् ॥ ३६ ॥
 सर्वपारमितापूरी सर्वभूमिविभूषणः ।
 विशुद्धधर्मनिरात्म्ये सम्यग्ज्ञानेन्दुहृत्प्रभः ॥ ३७ ॥
 मायाज्ञालमहोद्योगः सर्वतन्त्राधिपः परः ।
 अशेषवञ्ज्रपर्यङ्को निःशेषज्ञानकायधृक् ॥ ३८ ॥
 समत्तभद्रः सुमतिः क्षितिगर्भो जगद्धृतिः ।
 सर्वबुद्धमहागर्भो विश्वनिर्माणचक्रधृक् ॥ ३९ ॥
 सर्वभावस्वभावाद्यः सर्वभावस्वभावधृक् ।
 अणुत्पादधर्मविश्वार्थः सर्वधर्मस्वभावधृक् ॥ ४० ॥
 एकज्ञानमहाप्राज्ञः सर्वधर्मात्रयोधधृक् ।
 सत्रधर्माभिसमयो भूतान्तमुनिरग्रधीः ॥ ४१ ॥
 स्तिमितः सुप्रसन्नात्मा सम्यक्संबुद्धबोधधृक् ।
 प्रत्यक्षः सर्वबुद्धानां ज्ञानार्चिः सुप्रभास्वरः ॥ ४२ ॥
 ॥ प्रत्यवेत्तपाज्ञानगाथा द्वाचत्वारिंशत् ॥

इष्टार्थसाधकः परः सर्वापायविशोधकः ।

सर्वसत्त्वोत्तमो नाथः सर्वसत्त्वप्रमोचकः ॥ १ ॥

॥ नामसंगीति ॥

क्लेशसंग्रामशूरैकः अज्ञानरिपुदर्पका^{१)} ।
 धीः शृङ्गारधरः श्रीमां वीरबीभत्सरूपधृक् ॥ २ ॥
 बाहुदण्डशतान्तेपपदन्तिपनर्तनः^{२)} ।
 श्रीमच्छतभुजाभोगो गगनाभोगनर्तनः ॥ ३ ॥
 एकपादतलाक्रान्तमहोमण्डलस्थितः ।
 ब्रह्माण्डशिखराक्रान्तपादाङ्गुष्ठनखे स्थितः ॥ ४ ॥
 एकार्थो ऽद्वयधर्मार्थः परमार्थो ऽविनश्चरः ।
 नानाविज्ञप्तित्रयार्थश्चित्तविज्ञानसत्ततिः ॥ ५ ॥
 अशेषभावार्थरतिः शून्यतारतिरग्रधीः ।
 भवरागाद्यतीतश्च भवत्रयमहारतिः ॥ ६ ॥
 शुद्धः शुभाश्रयवलाः शरच्चन्द्रांशुमुप्रभः ।
 बालार्कमण्डलच्छायो महारागनखप्रभः ॥ ७ ॥
 इन्द्रनीलाग्रसञ्जीरो महानीलकचाग्रधृक् ।
 महामणिमयूखश्रीर्बुद्धनिर्माणभूषणः ॥ ८ ॥
 लोकधातुशताकम्पी ऋद्धिपादमहाक्रमः ।
 महास्मृतिधरस्तत्त्वशतुःस्मृतिसमाधिराट् ॥ ९ ॥
 बोध्यङ्गकुसुमामोदस्तथागतगुणोदधिः^{३)} ।
 अष्टाङ्गमार्गनयवित्सम्यक्संबुद्धमार्गवित् ॥ १० ॥
 सर्वसत्त्वमहासङ्गो निःसङ्गो गगनोपमः ।
 सर्वसत्त्वमनोज्ञातः सर्वसत्त्वमनोज्ञवः ॥ ११ ॥
 सर्वसत्त्वेन्द्रियार्थज्ञः सर्वसत्त्वमनोहरः ।
 पञ्चस्कन्धार्थतत्त्वज्ञः पञ्चस्कन्धविशुद्धधृक् ॥ १२ ॥
 सर्वनिर्वाणकोटिस्थः सर्वनिर्वाणकोविद् ।
 सर्वनिर्वाणमार्गस्थः सर्वनिर्वाणदेशकः ॥ १३ ॥

1) य. °कः — 2) य. °पः — 3) य. °धीः

॥ नामसंगीति ॥

द्वादशाङ्गभवेत्खातो द्वादशाकारशुद्धधृक् ।
 चतुः सत्यनयाकारो ऽष्टज्ञानावबोधधृक् ॥ १४ ॥
 द्वादशाकारसत्यार्थः षोडशाकारतत्त्ववित् ।
 त्रिंशत्याकारसंबोधिर्विबुद्धः सर्ववित्परः ॥ १५ ॥
 अमेयबुद्धनिर्माणकायकोटिविभावकः ।
 सर्वतत्त्वाभिसमयः सर्वचित्ततत्त्वार्थवित् ॥ १६ ॥
 नानापाननयोपायज्ञगर्ध्वविभावकः ।
 यानत्रितयनिर्यात एकयानफले स्थितः ॥ १७ ॥
 क्लेशधातुविशुद्धात्मा कर्मधातुतथेकरः ।
 ओघोदधिसमुत्तीर्णो योगकात्तारनिःसृतः^{१)} ॥ १८ ॥
 क्लेशोपक्लेशसंक्लेशमुप्रकीणसत्रासनः ।
 प्रज्ञोपाश्रमकाकरूणा अमोघज्ञगर्ध्वकृत् ॥ १९ ॥
 सर्वसंज्ञाप्रकीणार्थो^{२)} विज्ञानार्थो निरोधधृक् ।
 सर्वसत्त्वमनोविषयः सर्वसत्त्वमनोगतिः ॥ २० ॥
 सर्वसत्त्वमनो ऽतस्यस्तच्चित्तसमतांगतः ।
 सर्वसत्त्वमनोह्लादी सर्वसत्त्वमनोरतिः ॥ २१ ॥
 सिद्धान्तविश्रमापेतः^{३)} सर्वशान्तिविवर्जितः ।
 निःसन्दिग्धमतिस्त्रयधः सर्वार्थस्त्रिगुणात्मकः ॥ २२ ॥
 पञ्चस्कन्धार्थस्त्रिकालः सर्वतत्त्वविभावकः ।
 एकतत्त्वाभिसंबुद्धः सर्वबुद्धस्वभावधृक् ॥ २३ ॥
 अन्नङ्गकायः कायाग्र्यः कायकोटिविभावकः ।
 अशेषतत्त्वमंदर्शी रत्नकेतुर्महामणिः ॥ २४ ॥
 ॥ समताज्ञानगाथाश्रतुर्विंशतिः ॥

1) य. निःसृतः — 2) य. प्रह्ला° — 3) M. य. सिद्धान्तो, K. °मापगतः, M. °मागत

॥ नामसंगीति ॥

सर्वसंबुद्धबोद्धव्यो^{१)} बुद्धबोधिरनुत्तरः ।
 अनन्तरो मन्त्रयोनिर्मकामन्त्रकुलत्रयः ॥ १ ॥
 सर्वमन्त्रार्थजनको महाविन्दुरनन्तरः ।
 पञ्चान्तरो महाशून्यो विन्दुशून्यः षडन्तरः ॥ २ ॥
 सर्वाकारनिराकारः^{२)} षोडशार्धार्धविन्दुधृक् ।
 अकलः कलनातीतश्चतुर्थध्यानकोटिधृक् ॥ ३ ॥
 सर्वध्यानकलाभिज्ञः^{३)} समाधिकुलगोत्रवित् ।
 समाधिकायकायाग्र्यः सर्वसंभोगकायराट् ॥ ४ ॥
 निर्माणकायकायाग्र्यो बुद्धनिर्माणवृणधृक् ।
 दशदिग्विचित्रनिर्माणो यथावज्जगदर्थकृत् ॥ ५ ॥
 देवातिदेवोः देवेन्द्रः सुरेन्द्रो दानवाधिपः ।
 अमरेन्द्रः सुरगुरुः प्रमथः प्रमथेश्वरः ॥ ६ ॥
 उत्तीर्णभवकात्तार एकः शास्ता जगद्गुरुः ।
 प्रख्यातदर्शदिग्लोकधर्मदानपतिर्महान्^{४)} ॥ ७ ॥
 मैत्रीसंनारुसंनद्धः करुणावर्मवर्मितः^{५)} ।
 प्रज्ञावद्गधनुर्वाणः ज्ञेशाज्ञानरणंजकः ॥ ८ ॥
 मारारिर्मारिजिह्वीरश्चतुर्मारभयात्तकृत् ।
 सर्वमारचमन्त्रेता संबुद्धो लोकनायकः ॥ ९ ॥
 वन्द्यः पूज्यो ऽभिवाच्यश्च माननीयश्च नित्यशः ।
 अर्चनीयतमो मान्यो नमस्यः परमो गुरुः ॥ १० ॥
 त्रैलोक्यत्रयक्रमगतिर्व्योमापर्यन्तविक्रमः ।
 त्रैविद्यः श्रोत्रियः पूतः षडभिज्ञः पडनुस्मृतिः ॥ ११ ॥

॥ नामसंगीति ॥

बोधिसत्त्वो महासत्त्वो लोकातीतो महर्द्धिकः ।
 प्रज्ञापारमितानिष्ठः प्रज्ञातत्त्वत्वमागतः ॥ १२ ॥
 आत्मवित्परवित्सर्वः सर्वोयो ह्यग्रपुद्गलः ।
 सर्वोपमामतिक्रान्तो ज्ञेयो ज्ञानाधिपः परः ॥ १३ ॥
 धर्मदानपतिः श्रेष्ठश्चतुर्मुद्गार्थदेशकः ।
 पर्युपास्यतमो जगतां निर्याणत्रययायिनां ॥ १४ ॥
 परमार्थविशुद्धश्रीस्त्रैलोक्यसुभगो महान् ।
 सर्वसंपत्करः श्रीमान्मञ्जुश्रोः श्रीमतां वरः ॥ १५ ॥
 ॥ कृत्यानुष्ठानज्ञानगाथाः पञ्चदश ॥

नमस्ते वरद वज्राग्र भूतकोटि नमो ऽस्तु ते ।
 नमस्ते शून्यतागर्भ बुद्धबोधि नमो ऽस्तु ते ॥ १ ॥
 बुद्धराग नमस्ते ऽस्तु बुद्धकाय^{१)} नमो नमः ।
 बुद्धप्रीति नमस्तुभ्यं बुद्धमोद नमो नमः ॥ २ ॥
 बुद्धस्मित नमस्तुभ्यं बुद्धभास नमो नमः ।
 बुद्धवाच नमस्ते ऽस्तु बुद्धभाव नमो नमः ॥ ३ ॥
 अभवोद्धव^{२)} नमस्ते ऽस्तु नमस्ते बुद्धसंभव ।
 गगनोद्भव नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्ञानसंभव ॥ ४ ॥
 मायाजाल नमस्तुभ्यं नामस्ते बुद्धनाटक ।
 नमस्ते सर्वसर्वेभ्यो ज्ञानकाय नमो ऽस्तु ते ॥ ५ ॥
 ॥ इति पञ्चतथागतज्ञानस्तुतिगाथाः पञ्च ॥

इयमसौ वज्रपाणो वज्रधर भगवतो ज्ञानमूर्तेः सर्वतथागतज्ञानकायस्य मञ्जुश्रीज्ञानस-
 त्वस्यावेणिकपरिणुद्धा नामसंगीतिस्तवानुत्तरप्रीतिप्रसादमहौदित्यसंजननार्थं कायवाञ्छ-
 ३)

१) Y. °काम — २) Y. अगा° — ३) P. °द्विप्र —

१) Y. °बोध्यग्र्यो — २) Y. सर्वाकारो — ३) Y. °काला° — ४) Y. प्रख्यातो —

५) M. °धर्म°

नोगुह्यपरिशुद्धे अपरिपूर्णापरिशुद्धभूमिपरिमितापुण्यज्ञानसंभारपरिपूरिपरिशुद्धे^{१)} । अन-
धिगतानुत्तरार्थस्याधिगमाय । अप्राप्तस्य प्राप्त्यै ॥ यावत्सर्वतथागतसङ्घर्षनेत्री संधार-
णार्थं च मया देशिता संप्रकाशिता च विवृता^{२)} विभक्तितोतानीकृता अधिष्ठिता चेयं
मया वज्रपाणे वज्रधर तत्र संताने सर्वमन्त्रधर्मताधिष्ठानेनेति ॥

प्रथमचक्रस्येयमनुशांसा तत्पदान्येकादश ॥

पुनरपरं वज्रपाणे वज्रधर इयं नामसंगीतिः सुविशुद्धपर्यवदातसर्वज्ञज्ञानकायवाञ्छ-
नोगुह्यभूता सर्वतथागतानां बुद्धबोधिः सम्यक्संबुद्धानामभिसमयः ॥ सर्वतथागतानामनु-
त्तरधर्मधातुगतिः सुगतानां ॥ सर्वमारबलपराज्ञयो जिनानां ॥ दशबलबलिता सर्वदश-
बलानां ॥ सर्वज्ञता सर्वज्ञानानामागमः सर्वबुद्धधर्माणां ॥ समुदागमः सर्वबुद्धानां ॥ वि-
मलसुपरिशुद्धपुण्यज्ञानसंभारपरिपूरिः^{३)} सर्वमहाबोधिसत्त्वानां ॥ प्रसूतिः सर्वश्रावक-
प्रत्येकबुद्धानां^{४)} ॥ क्षेत्रं सर्वदेवमनुष्यसंपत्तेः ॥ प्रतिष्ठा महायानस्य ॥ संभवो बोधिसत्त्व-
चर्यायाः ॥ निष्ठा सम्यगार्यमार्गस्य ॥ निकषो विमुक्तीनां^{५)} । उत्पत्तिर्निर्याणमार्गस्य^{६)} ॥
अनुच्छेदस्तथागतवंशस्य ॥ प्रवृद्धिर्महाबोधिसत्त्वकुलगोत्रस्य ॥ नियतः सर्वपरप्रवा-
दिनां ॥ विघ्नसंनं सर्वतीर्थिकानां ॥ पराज्ञयश्चतुर्मारबलचमूसेनायाः ॥ संग्रहः सर्वसत्त्वानां ॥
आर्यमार्गपरिपाकः सर्वनिर्याणायपिनां ॥ समाधिश्चतुर्बुद्धाविहारिणां ॥ ध्यानमेकाग्र-
चित्तानां ॥ योगः कायवाञ्छनोभियुक्तानां ॥ विसंयोगः सर्वसंयोजनानां ॥ प्रकाशं सर्वक्लि-
शोपक्लेशानां ॥ व्युपशमः सर्वावरणानां ॥ विमुक्तिः सर्वबन्धनानां ॥ मोक्षः सर्वोपधीनां ॥
शान्तिः सर्वचित्तोपप्लवानां ॥ आकरः सर्वसंपत्तीनां ॥ परिहाणिः सर्वविपत्तीनां^{७)} पितृनं
सर्वापायद्वाराणां ॥ सत्पथो विमुक्तिपुरस्य ॥ अप्रवृत्तिः संसारचक्रस्य ॥ प्रवर्तनं धर्मच-
क्रस्य ॥ उच्छिन्नच्छिन्नघनपताकास्तथागतशासनस्य ॥ अधिष्ठानं सर्वधर्मदेशनायाः ॥
निप्रसिद्धिर्मन्त्रमुख्यचारिणां^{८)} बोधिसत्त्वानां ॥ भावनाधिगमः प्रज्ञापारमिताभियुक्ता-
नां ॥ शून्यताप्रतिवेधः भावनाभियुक्तानां ॥ अद्वयप्रतिवेधः^{९)} प्रतिभानाभियुक्तानां^{१०)} ॥

1) P'. नैत्यं. — 2) P'. °ता — 3) P'. °परिशु° — 4) P'. °विशुद्धि° — 5) P'. °पूरी
— 6) P'. °बुद्धसंपत्तेः — 7) P'. नैत्यं. — 8) P'. °ताकाभिस्त° — 9) K. пропущено.

निष्पत्तिः सर्वपारमितासंभारस्य ॥ परिशुद्धिः सर्वभूमिपारमितापरिपूर्णे^{१)} ॥ प्रतिवेधः
सम्यक्कतुरार्यसत्यानां ॥ सर्वधर्मैकचित्तप्रतिवेधश्चतुःस्मृत्युपस्थानानां ॥ यावत्परिसमाप्तिः
सर्वबुद्धगुणानामियं नामसंगीतिः ॥

द्वितीयचक्रस्येयमनुशांसा^{२)} तत्पदानि द्वापञ्चाशत् ॥

पुनरपरं वज्रपाणे वज्रधर इयं नामसंगीतिः सर्वसत्त्वानामशेषेकायवाञ्छनःसमुदाचार-
पायप्रशमनी ॥ सर्वसत्त्वानां सर्वापायानां विशोधनी^{३)} ॥ सर्वदुर्गतिनिवारणी ॥ सर्वकर्मव-
रणानां समुच्छेदनी ॥ सर्वाष्टाक्षसमुत्पादस्यानुत्पादकरी^{४)} ॥ अष्टमहाभयव्युपशमनकरी ॥
सर्वदुःस्वप्ननिर्नाशनी^{५)} ॥ सर्वदुर्निमित्तव्यपोहनकरी ॥ सर्वदुःशुकुनविघ्नव्युपशमनक-
री^{६)} ॥ सर्वमारारिकर्मदूरीकरणी ॥ सर्वकुशलमूलपुण्यस्योपचयकरी ॥ सर्वायोनिशो-
मनस्कारस्यानुत्पादनकरी ॥ सर्वमदमानदर्पाहंकारनिर्घातनकरी ॥ सर्वदुःखदैर्मनस्या-
नुत्पादनकरी^{७)} ॥ सर्वतथागतानां हृदयभूता^{८)} ॥ सर्वबोधिसत्त्वानां गुह्यभूता ॥ सर्वश्रा-
वकप्रत्येकबुद्धानां रक्ष्यभूता ॥ सर्वमुद्दामन्त्रभूता ॥ सर्वधर्मानभिलाष्यवादिनां स्मृति-
संप्रज्ञान्यसंजननी ॥ अनुत्तरप्रज्ञामेधाकरी^{९)} ॥ आरोग्यबलैश्वर्यसंपत्करी ॥ श्रीशुभशास्त्रि-
कल्याणप्रवर्धनकरी ॥ यशःश्लोककीर्तिस्तुतिसंप्रकाशनकरी ॥ सर्वव्याधिर्महाभयप्रश-
मनकरी^{१०)} ॥ पूततरा पूतराणां ॥ पवित्रतरा पवित्रतराणां ॥ धन्यतमा धन्यतमानां ॥
सर्वमङ्गलानां माङ्गल्यतमा^{११)} ॥ शरणं शरणार्थिनां ॥ लयनं लयनार्थिनां ॥ त्राणं त्राणा-
र्थिनां ॥ परायणमपरायणानां^{१२)} ॥ दीपभूता दीपार्थिनां ॥ अगतिकानामनुत्तरगतिभूता ॥
यानपात्रभूता भवसमुद्रपारगामिनां ॥ महाभैषज्यराजभूता सर्वव्याधिनिर्घातनया ॥ प्रज्ञा-
भूता ह्येयोपादेयभावविभावनया ॥ ज्ञानालोकभूता सर्वतमोऽन्धकारकुदृष्ट्यपनयनात्^{१३)} ॥
चित्तामणिभूता सर्वसत्त्वपथाशयाभिप्रायपरिपूर्णात्^{१४)} ॥ सर्वज्ञज्ञानभूता मञ्जुश्रीज्ञान-

1) P'. भूमिपरिशुद्धे — 2) K. द्वितीयस्य महाविरोचन(च)क्रस्ये° — 3) P'. °पायप्रशो°
— 4) P'. °दनकरी — 5) P'. °प्रविघ्नव्युपशमनकरी — 6) P'. नैत्यं. — 7) K. — P'.
вставлено выше. — 8) K. °पादकरी — 9) P'. नैत्यं. — 10) P'. °व्युपश° — 11) P'.
°ल्यतमा सर्वमङ्गल्यतमानां — 12) P'. परायणार्थिनां — 13) P'. °नाय — 14) P'.
°णाय —

कायप्रतिलम्भाय ॥ परिशुद्धज्ञानदर्शनभूता १) पञ्चचतुःप्रतिलम्भाय ॥ षट्पारमितापरि-
पूरिभूता ॥ आमिषाभयधर्मदानोत्सर्जनतया २) ॥ दशभूमिप्रतिलम्भभूता पुण्यज्ञानसंभार-
समाधिपरिपूरणतया ॥ अद्वयधर्मताद्वयधर्मविगतत्वात् ॥ तथातद्गतानन्यधर्मताध्यारो-
पविगतत्वात् ॥ भूतकोटिद्वपता परिशुद्धतथागतज्ञानकायस्वभावतया ॥ सर्वाकारमहा-
शून्यताद्वपता अशेषकुदृष्टिगहनगतिनिर्घातनतया ३) ॥ सर्वधर्मानभिलाष्यद्वपेयं नामसंगी-
तिः ॥ पडताद्वयधर्मतार्थं नामसंधारणप्रकाशनतयेति ॥

तृतीयचक्रस्येयमनुशंसा तत्पदानि द्वापञ्चाशत् ॥

पुनरपरं वज्रपाणे वज्रधर यः कश्चित्कुलपुत्रो वा कुलडहिता वा मन्त्रमुखचर्याचारी
इमां भगवतो मञ्जुश्रीज्ञानसत्त्वस्य सर्वतयागतज्ञानकायस्य ४) ज्ञानमूर्तेरद्वयपरमार्थी नाम-
संगीतिं नामचूडामणिं सकलपरिसमाप्तमन्यूनामखण्डामिभरेव पदव्यञ्जनैः प्रत्यक्ष-
खण्डं ५) त्रिकालं ६) धारयिष्यति वाचयिष्यति पर्यवाप्स्यति योनिशोमनसिकरिष्यति ॥
परेभ्यश्च यथा योग्यतः संप्रकाशयिष्यति ॥ प्रत्येकं चान्यतमान्यतमनामार्थं मञ्जुश्रीज्ञान-
कायमालम्बनीकृत्य एकाग्रमानसो भावयिष्यति ॥ अधिमुक्तिकतत्त्वमनस्काराभ्यां समस्त-
मुखविहारविहारी सर्वधमप्रतिवेधिकया परमया अनाविलया पज्ञानुविद्धया अद्वया सम-
न्वागतः संस्तस्य त्र्यधानधसमद्भिः सर्वबुद्धबोधिसत्त्वाः समागम्य संगम्य सर्वधर्ममुखान्यु-
पदर्शयिष्यति ॥ आत्मभावं चोपदर्शयिष्यति ॥ उदात्तदमकाश्च महाक्रोधराज्ञानो महा-
वज्रधरादयो जगत्परित्राणभूता नानानिर्माणरूपकयैरोन्नोन्नतं तेषां ऽप्रधृष्यतां ॥ सर्वमु-
द्रामन्त्राभिसमयमण्डलान्युपदर्शयिष्यति ॥ अशेषाश्च मन्त्रविद्याराज्यः सर्वविघ्नविनायक-
माराणां ७) महाप्रत्यङ्गिरा महापराज्ञिताः सरात्रिदिवं प्रतिज्ञां सर्वेषामप्येषु रत्नावरणगुप्तिं
करिष्यति ८) ॥ सर्वबुद्धबोधिसत्त्वाधिष्ठानं करिष्यति ॥ सर्वकायवाञ्छनोभिस्तस्य संताने
सम्यगधिष्ठास्यति ॥ सर्वबुद्धबोधिसत्त्वानुग्रहेणा चानुग्रहीष्यति ॥ सर्वधर्माणां वैशारद्यं
तस्य प्रतिभानं तच्चोपसंहरिष्यति ॥ सर्वाहंकारावकप्रत्येकबुद्धार्थधर्मप्रेमाशयतया आत्म-

1) P'. °नादर्श° — 2) K. नैर्त्. — 3) P'. °त्सु° — 4) P'. °रूपता° — 5) P'.
°निर्घोषतया — 6) P'. नैर्त्. — 7) K. नैर्त्. — 8) K. त्रिष्कालं — 9) P'. नैर्त्.

भावं चोपदर्शयिष्यति ॥ ये च ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रहृदनारायणसन्तकुमारमहेश्वरकार्तिकेय-
महाकालनन्दिकेश्वरयमवरुणकुबेरहारीतीदृशदिग्लोकपालाश्च सततसमितं सरात्रिं-
दिवं गच्छन्तिष्ठतः शयानस्य निषण्णस्य स्वपतो जाग्रतः १) समाहितस्यासमाहितस्य
च एकाकिनो बद्धजनमध्यगतस्य च यावद्दामनगर्निगमजनपदराष्ट्रराजधानीमध्यगतस्ये-
न्द्रकीलार्थ्याप्रतोलोनगरद्वारवोशीचवरशृङ्गाटकनगरात्तरापणपण्यशालामध्यगतस्य
यावच्छूयागर्गिरिकन्दरनदीवनगहनोपगतस्य २) ॥ उच्छिष्टस्यानुच्छिष्टस्य मत्तस्य
प्रमत्तस्य सर्वदा सर्वथा सर्वप्रकारं ३) च परां रत्नावरणगुप्तिं करिष्यति ॥ रत्रिदिवं ४)
परं स्वस्त्ययनं करिष्यति ॥ ये चान्ये देवनागयत्नगन्धर्वा सुरगृह्णन्किंनरमहोरगा मनु-
ष्यामनुष्याश्च ये चान्ये ग्रहनन्त्रमातृगणपतयो याश्च सप्त मातरो याश्च यन्निणीरात्सो-
पिशाच्यस्ताः सर्वाः सहिताः समग्राः सत्तैः ५) सपरिवाराः सानुचराः ६) सर्वे ते रत्नावर-
णगुप्तिं करिष्यति ॥ परं च तस्य काये श्रोत्रोन्नतं प्रतेष्यति ॥ आरोग्यबलमायुर्वृद्धिं
श्रोपसंहरिष्यति ॥

चतुर्थचक्रस्येयमनुशंसा तत्पदान्येकोनविंशतिः ॥

पुनरपरं वज्रपाणे वज्रधर य इमां नामसंगीतिं नामचूडामणिं प्रत्यक्षखण्डसमादान-
तस्त्रिःकृत्वा कण्ठगतामवर्तयिष्यति १२) ॥ पुस्तकगतां वा पठमानः प्रवर्तयिष्यति ॥
भगवतो मञ्जुश्रीज्ञानसत्त्वस्य रूपमालम्बयन्ननुविचिन्तयन्तद्रूपमनुध्यायन् ॥ तमेव रूपकाये-
नाचिरादेव धर्मविनयमुपादाय यद्वत्तति १३) गगनतलगतं सर्वबुद्धबोधिसत्त्वानानि-
र्माणरूपकायैः सहगताद्भवति १४) ॥ न तस्य महासत्त्वस्य ज्ञातुं कदाचित्कथमपि दुर्ग-
त्यपायपतनं च भविष्यति ॥ नीचकुलोपपत्तिर्न भविष्यति ॥ प्रत्यक्षजनपदोपपत्तिर्न

1) P'. °तस्य — 2) K. नैर्त्. — 3) P'. नैर्त्. — 4) K. °राजमार्गश्चतुष्पथः शृङ्गाटकं
त्रिपथः — 5) P'. °गदतोय° — 6) K. नैर्त्. — 7) K. °दिनं — 8) P'. पिशाचोरात्स्य°
— 9) K. नैर्त्. — 10) P'. नैर्त्. — 11) K. एकाविंशतिरङ्गतो ऽपि २१. — 12) P'. का-
यकण्ठ° — 13) K. सत्त्वाशयवशाद्भवति — 14) P'. °ह्य°

भविष्यति ॥ न ह्येनेन्द्रियो भविष्यति ॥ न विकलेन्द्रियो भविष्यति ॥ न मिथ्यादृष्टिकु-
लोपपत्तिर्भविष्यति ॥ नाबुद्धेषु बुद्धतेत्रेषूपपद्यते¹⁾ ॥ न बुद्धोत्पादतेद्देशितधर्मवि-
मुखपरोक्षता भविष्यति ॥ न च दीर्घायुष्केषु देवेषूपपद्यते²⁾ ॥ न च दुर्भित्तरो गणशस्त्रा-
त्तरकल्पेषूपपद्यते³⁾ ॥ न च पञ्चकषायकालेषूपपद्यते⁴⁾ ॥ न च राजशत्रुचौरभयं भविष्य-
ति ॥ न च सर्ववैकल्पदारिद्र्यभयं⁵⁾ ॥ न चाश्लोकाभ्याख्याननिन्दायशोऽकीर्तिभयं भवि-
ष्यति ॥ मुजातिकुलगोत्रसंपन्नश्च लोकानां⁶⁾ भविष्यति ॥ समत्प्रसादादिकद्रवपर्णसम-
न्वागतो भविष्यति ॥ प्रियो मनश्चापसुखसंवाप्तप्रियदर्शनश्च लोकानां भविष्यति ॥
शुभसौभाग्यादेयवाक्यश्च सत्त्वानां⁷⁾ भविष्यति ॥ स यत्र यत्रोपपद्यते⁸⁾ तत्र तत्र ज्ञाता ज्ञाता
ज्ञातिस्मरो भविष्यति ॥ महाभोगो महापरिवारो ऽन्नभोगो ऽन्नपरिवारो भविष्यति ॥
अग्रणीः सर्वसत्त्वानामग्रगुणसमन्वागतो भविष्यति ॥ अन्यैश्चाप्रमेयैरेवंप्रकारैर्गुणगणैः⁹⁾
समन्वागतो भविष्यति ॥ प्रकृत्या च षट्कार्मितागुणैः समन्वागतो भविष्यति ॥ चतुर्ब्रह्म-
विहारविहारी च भविष्यति ॥ स्मृतिसंपन्नयोपायबलप्रणिधिज्ञानैः¹⁰⁾ समन्वागतो¹¹⁾
भविष्यति ॥ सर्वशास्त्रविशारदो वाग्मी च भविष्यति ॥ स्पष्टवागन्नडपटुमतिर्भविष्यति ॥
दत्तो ऽनलसः संतुष्टो महार्थवितृष्णाश्च भविष्यति ॥ परमविश्वासी च सर्वसत्त्वानां भवि-
ष्यति ॥ आचार्योपाध्यायगुरुणां च संमतो¹²⁾ भवति ॥ अश्रुतपूर्वाणि च तस्य शिल्पकलाभि-
ज्ञानज्ञानशास्त्राणि चार्थतो ग्रन्थतश्च प्रतिभासमागमिष्यति ॥ सुपरिशुद्धशीलाजीवसमु-
दाचार्यचारी च भविष्यति ॥ सुप्रब्रजितः सर्वसंपन्नश्च¹³⁾ भविष्यति ॥ अग्रमुषितसर्व-
ज्ञतामहाबोधिचित्तश्च भविष्यति ॥ न ज्ञातु¹⁴⁾ आवाकार्कृतप्रत्येकबुद्धनियमावक्रान्तिग-
तश्च¹⁵⁾ भविष्यति ॥

पञ्चमचक्रस्येयमनुशांसा तत्पदान्येकपञ्चाशत्¹⁴⁾ ॥

1) K. °पत्स्यते — 2) K. सर्वोपकरणानां वस्त्रादीनां वैकल्पं — 3) K. नैत्. —
4) K. लोकस्य — 5) K. °पत्स्यते — 6) K. एतौ ऋषयो नैत्. — 7) P'. °प्रकृति° —
8) K. °तश्च — 9) P'. संपन्नो — 10) P'. °लो जीवसमुदाचार्यो भवति — 11) K. सूर्यसंप° ।
अच्छिद्रशरीरत्वात् । — 12) K. नैत्. — 13) P'. °क्रान्तपति° — 14) K. एतौ पद-
पिसि नैत्.

एवं वज्रपाणो वज्रधर अग्रमेयगुणसमन्वागतो ऽसौ¹⁾ मन्त्रमुखवर्षाचारी²⁾ भविष्यति ॥
अन्यैश्चाप्रमेयैरेवंप्रकारैरेवंज्ञातीयैर्गुणगणैः समन्वागतो भविष्यति ॥ अचिरादेव वज्र-
पाणो वज्रधर परमार्थानामसंगीतिसंधारकः³⁾ पुरुषपुंगवः सुसंभृतपुण्यज्ञानसंभारः⁴⁾ क्षिप्र-
तरं बुद्धगुणान्समुदानुयानुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसंभोत्स्यते ॥ अनल्पकल्याणपरिनि-
वाणधर्मः सर्वसत्त्वानामनुत्तरधर्मदेशको ऽधिष्ठितो दशदिक्सद्धर्मदण्डुभिर्धर्मराज इति ॥
षष्ठचक्रस्यानुशांसा तत्पदान्यप्रमेयाणि⁴⁾ ॥

श्रौं सर्वधर्मा भावस्वभावविशुद्धवज्र अ आ अं अः ।
प्रकृतिपरिशुद्धाः सर्वधर्मा यदुत सर्वतथागतज्ञानकायमञ्जु-
श्रीपरिशुद्धितामुपादायेति⁵⁾ ॥
अ आः⁶⁾ सर्वतथागतहृदय ह्र ह्रः ॥
श्रौं ह्रूं ह्रौः भगवन्ज्ञानमूर्ते वागीश्वर महावाच सर्वधर्मग-
गनामलसुपरिशुद्धधर्मधातुज्ञानगर्भ आः ॥
॥ मन्त्रविन्याशः ॥

अथ वज्रधरः श्रीमां हृष्टतुष्टः कृताञ्जलिः ।
प्रणम्य नाथं संबुद्धं भगवत्तं तथागतं ॥ १ ॥

1) P'. नैत्. — 2) P'. °धारक — 3) K. सुसंभग° — 4) K. पञ्चमचक्रस्येयमनुशांसा ।
तत्पदानि एकपञ्चाशत् । अङ्कतो ५१ ॥ इयमसौ वज्रपाणो वज्रधरेत्यारभ्य यावद्धर्मराज
इत्येताः पञ्चानुशांसा एकीकृत्य । न तत्रैतः आर्यनामसंगीतिटीकायां नाममन्त्रार्थावलो-
किन्यामनुशांसाधिकारो द्वादशमः ॥ Этотъ отдѣлъ, пропущенный въ рукописяхъ,
которыми пользовался издатель, былъ найденъ имъ по напечатаніи текста въ
рукописи Парижской Национальной Библиотеки (fond Burnouf 125). Въ каталогѣ
рукопись обозначена suprabhâstotra по заглавію послѣдняго листа; на
самомъ дѣлѣ это сборникъ многихъ гимновъ. К. въ прим. обозначаетъ рук.
тѣни; см. предисловіе, стр. XII. — P'. парижскую рукопись. — 5) У. — М. °यति
— 6) У. нैत्.

॥ नामसंगीति ॥

अन्यैश्च बहुविधैर्नाथैर्गुह्यैर्द्वैर्वज्रपाणिभिः ।
स सार्धं क्रोधराजनैः^{१)} प्रोवाचौच्चैरिदं वचः ॥ २ ॥
अनुमोदामहे नाथ साधु साधु सुभाषितं ।
कृतो ऽस्माकं महानर्थः सम्यक्संबोधिप्रापकः ॥ ३ ॥
जगतश्चाप्यनाथस्य विमुक्तिफलकाङ्क्षिणः ।
श्रेयो मार्गो विशुद्धो ऽयं मायाजालनयोदितः ॥ ४ ॥
गम्भीरोदारवैपुल्यो^{२)} महार्थो जगदर्थकृत् ।
बुद्धानां विषयो ह्येष सम्यक्संबुद्धभाषितः ॥ ५ ॥
॥ इत्युपसंहारगाथाः पञ्च^{३)} ॥

आर्यमायाजालाषोडशसाहस्रिकाद्ययोगतन्त्रात्तःपातिसमाधिजालपटलाद्भगवत्तथागतशाक्यमुनिभाषिता भगवतो मञ्जुश्रीज्ञानसत्त्वस्य परमार्था नामसंगीतिः परिसमाप्ता ॥
अथा इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ ऋ ॠ स्त्रितो हृदि ज्ञानमूर्तिरहं बुद्धो बुद्धानां त्र्यधवर्तिनां श्रेष्ठं वज्रतोदण्डुःखच्छेदप्रज्ञाज्ञानमूर्तये ज्ञानकायवागीश्वरघरपचनाय ते नमः ॥
मङ्गलं भवतु^{४)} ॥

1) P. Y. °ज्ञ°, M. °ज्ञानि — 2) Y. °ल्य — 3) Y. ऋत्त्. — 4) M. ऋत्त्.

॥ नामसंगीति ॥

इयमसौ वज्रपाणे वज्रधर भगवतो ज्ञानमूर्तेः सर्वतथागतज्ञानकायस्य मञ्जुश्रीज्ञानसत्त्वस्यावेणिकपरिशुद्धा नामसंगीतिस्तवानुत्तरीतिप्रसादमहोद्विल्यसंजननार्थकरी । सर्वव्याधिमह्नाभयप्रशमनकरी पवित्रतरा पवित्रतराणां ॥ धन्यतरा धन्यतराणां सर्वमङ्गलं माङ्गल्यानां वज्रपाणे ॥ शरणं शरणार्थिनां लयनं लयनार्थिनां त्राणं त्राणार्थिनां परायणं परायणार्थिनां ॥ दीपभूता दीपार्थिनामगतिकानां अनुत्तरगतिः ॥ सुगतानां भवसमुद्रपारगामिनां महामैषव्यराजभूता ॥ सर्वतमोऽन्धकारकुदृष्ट्यपनयनाय चित्तामणिराजभूता ॥ सर्वसत्त्वयथाशयाभिप्रायपरिपूर्णाया सर्वज्ञज्ञानभूता ॥ पञ्चचतुष्टयप्रतिलम्भाषट्पारमितापरिपूरिता ॥ पुनरपरं वज्रपाणे वज्रधर इमां नामसंगीतिं नाम चूडामणिं प्रत्यहमखण्डसमादानतः त्रिष्कारं^(?) कृत्वा कण्ठगतामावर्तयिष्यति पुस्तकगतां पठमानः प्रवर्तयिष्यति ॥ पुनरपरं वज्रपाणे न च नोचकुलोपपन्ना न च विकलेन्द्रियाश्च भविष्यति न ह्येनेन्द्रियाश्च ज्ञायन्ते किन्तु बुद्धत्वेनेषूपपद्यन्ते ॥ न च दुर्भित्तरोगशस्त्रात्तरकल्पेषूपपद्यन्ते ॥ पुनरपरं वज्रपाणे वज्रधर अग्रमेयगुणासमन्वागतश्च भविष्यति ॥ अग्रमेयविद्यासमन्वागतो भविष्यति ॥ पुनरपरं वज्रपाणे इयं नामसंगीतिं धारयति वाचयति पाठयति प्रवर्तयति ॥

॥ अनुशंसास्तुतिः^{१)} ॥

1) Другая, краткая редакция пропущенного во многих рук. отдела, взята из рук. кембриджской университетской библиотеки (см. Bendall, Catalogue, стр. 47), Add. 1323, л. 33 об. — Рукописью кембриджской библиотеки издатель не пользовался для другихъ иѣсть вѣсть на масамгити.

藏前 南無

一 萬

~~...~~
...

三 佛名號類名

...

...

...

...

明 行 足

...

...

如法中演出真正法語

諸經中檢出成語

...

...

...

...

...

...

...

...

...

如 未

...

...

...

...

應 供

...

...

...

...

...

...

You are free:

to Share — to copy, distribute and transmit the work



to Remix — to adapt the work

Under the following conditions:

Attribution — You must attribute the work in the manner specified by the author or licensor (but not in any way that suggests that they endorse you or your use of the work).



Noncommercial — You may not use this work for commercial purposes.



Share Alike — If you alter, transform, or build upon this work, you may distribute the resulting work only under the same or similar license to this one.

With the understanding that:

Waiver — Any of the above conditions can be **waived** if you get permission from the copyright holder.

Public Domain — Where the work or any of its elements is in the **public domain** under applicable law, that status is in no way affected by the license.

Other Rights — In no way are any of the following rights affected by the license:

- Your fair dealing or **fair use** rights, or other applicable copyright exceptions and limitations;
- The author's **moral** rights;
- Rights other persons may have either in the work itself or in how the work is used, such as **publicity** or privacy rights.

Notice — For any reuse or distribution, you must make clear to others the license terms of this work. The best way to do this is with a link to this web page.